



ISSN : 2393 - 9362

साहित्य सरस्वती

जुलाई - सितम्बर 2020
वर्ष - सात अंक 27



श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय, सागर (म.प्र.)



Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

3 समसंख्य - सुदेश आचार्य

5 ललाक्षेय - लक्ष्मी मण्डेय

कहानी

11 एक के गंधी - भयान : रमेशचन्द्र रा

15 भयानकाव्य उपाध्याय - भयान अमेरिका के भारतीय मित्रता

आलेख

21 डॉ. चन्द्रिका प्रसाद होशियार "ललित" - मानसोत्तर रामकाव्य रामकाव्य का एक दुर्लभ महाकाव्य राम राम भूमि का ऐतिहासिक साक्ष्य तथा मानव दमन का अभ्युदय

23 रमेश प्रसाद - रमेश

32 डॉ. आशीष द्विवेदी - राष्ट्रीय की अभिवृद्धि का संकेत का लेख

37 निर्मला डोसी - भारतीय मित्रता

42 डॉ. अनूपी मर्यादा - भारत में संविधान - 19 के समय शिक्षा का संकेत : समानता और समाधान

45 डॉ. चन्द्रश्याम भारती - आचार्य रं कामतारालाद मुक्त की रचनाधर्मिता

कहानियाँ

48 शेर सिंह - समय का फेर

53 अरुण आर्य खन्ने - पुनर्जन्म

62 अशोक लल्लू - पिछला दशक

64 डॉ. चन्द्रना मुखा - प्रकृति से संवाद

69 माता रमा - मित्र

अन्यथा कहानी (अनुवादित)

72 महिम बहा - लेन में से बहा लेन

संस्कृत

41 नरेन्द्र किशोर लिखा - लिखा

कविताएँ

12 वीरेश्वर राम 'सोम'

13 ले रमेश मण्डेय 'मोहलिया'

14 आशु सिंह

16 अशोक लल्लू 'समय'

18 समसंख्य मुखा

19 अनिल

20 रमेश मिश्रा

22 डॉ. आलेख रं

23 सोम मुखा

24 विमल रमेश रं

25 मनीषा मण्डेय

26 अशोक लल्लू 'मित्रता' 'सुदेश'

27 डॉ. सोम मुखा

28 अशोक लल्लू

29 सुदेश रं

30 लल्लू मुखा 'सुदेश'

31 अशोक

समीक्षाएँ

32 सुदेश आचार्य - रमेश रं का कहानी

33 अनिल अशोक - रमेश रं का रं

34 रमेश रं - रं के लेख

35 विमल रमेश - रमेश

36 विमल - रं के लेख 'मित्रता',

अमेरिका का ओगोरीय कथा समसंख्य रं

विमल रमेश रं ओगोरीय कथा-

कविता समसंख्य

37 रमेश रं

October 1948. October 16. Sunny. 11/10/48

Answer: Yes as the demand is increasing and the supply is decreasing.

A. angustata S. & G. 1; *S. angustata* var. *S. angustata*

[illegible][illegible]

निर्माण के लिए मनुष्य का जीव अंशों में विच्छेदन हो
 है। अतः मनुष्य मनुष्य-विशेषक का आवरण और अन्य
 क्रिया-कलाप का अंशों पर बहुत महत्व अत्यंत महत्व
 है। विशेषक जीवण में विच्छेदनापूर्ण सामाजिक
 जीवन, कुल-धर्म और जीवन-विधियों के अंशों :
 ज्ञान में अवलोकन, कला, विज्ञान एवं तत्वे
 विशेषक विशेषक के समस्त मनुष्यत्व निर्माण में व
 जीवनक निमित्त है। जीवन-विशेषक निर्माण
 एवं अन्य क्रिया-कलाप विशेषक निर्माण को पूर्ण
 को और वे जीव हैं।

श्रीवत्सालन पञ्चाल में अनेकाल से न के बरग
अपने कहने का मात्र में सामान्य है। इसमें विस्तार
ज्ञान तो हीनमान का होगा, लेकिन इसका लोभ जग
एक गेहल की तरह ही पालिन्दक होगा। ईश्वर ने
श्री वत्सालन पञ्चाल के वर्तमान दौर में रहने।
समान में कहने जा रहे कलौ गुहाओं में सामान्य
कीजय श्री वत्सालन पञ्चाल अतिशय के विकास
में श्रीवत्सालन शिक्षा साधक के बजाय साधक साधि
ही एकलौ है। अगर ऐसा हुआ तो शिक्षा का प्रश्न
लक्ष्य वाली अतिशय और निर्माण का कार्य अपूर्ण
ही होगा।

विज्ञान का दूसरा पहलू यह था कि काव्यात्मक है जो पहले लक्ष्य में ही गुप्त हुआ है। अगर व्यक्ति सामाजिक जीवन के लिए, न केवल गुण सह आध्यात्मिकता एवं सहयोगिता आदि लोक में विकसित हो पाए, तो समाज नीतिक स्तर पर बने ही सम्पन्न हो पाए, लेकिन इसमें अनेक विषयों वियोगी सामाजिक व्यवस्थाओं को जन्म देगी।

Source: *Journal of the Royal Society of Medicine*, 1911, (N.S.)